लोकमत समाचार
पुणे, बुधवार, 4 मार्च, 2015

पुस्तक समीक्षा

'रिश्तों के परे रिश्ते'/ डॉ. पद्मजा घोरपड़े

# मानवीयता के यथार्थ धरातल पर आधारित है

मानवीयता की परिभाषा देना अत्यंत कठिन कार्य है क्योंकि मानवीयता के विविध पहलूओं को किसी एक वाक्य मेंआबद्ध करनाउसकेमूल्यों की अवहेलना करने जैसा होगा. अतः कालिकाप्रसाद के बृहद् हिंदीकोश के अनुसार-मानवता का अर्थ है, मनुष्यता (मानवता के उच्चआदर्शों के प्रतिआस्थाका भाव). डॉ.पद्मजा घोरपड़े द्वारा लिखित कहानी संकलन 'रिश्तों के परे रिश्ते' इसी मानवीयता के धरातल पर अधारित चरित्रों का संस्मरण रूपी आलेख है. प्रस्तुत कहानी संकलन मेंकुल 7 कहानियाँ संकलित है. मुन्नी सभीकहानियों के केंद्र में है. मुन्नी बचपन से लेकर पुणे के कॉलेज के प्रोफेसर पद तक पहुँचने के लंबे सफर को तय करती है, पर अपने यादों के साये को नहीं भूला पाती यही इन कहानियों की प्रमुख विशेषतार ही है. इसमें उसके बचपन के दिन जो प्राकृतिक गाँवों में बीते उन्हें भी वह नहीं भूल पाती है. इस लंबे सफर को तय करते समय जो भी उसके संपर्क में आए उन्हेंआज तक वह नहीं भूला पाई. मुन्नी या मुनिया कोईऔर न होकर स्वयं लेखिका के व्यक्तित्व को दर्शाती है. लेखिका के संपर्क में बचपन से लेकर अब तक आए हुए सहयात्रियों का लेखा-जोखा इन कहानियों में अंकित है. 'दुधवालामामा', 'धोंडूमौसी और उनकी माँ', 'मुन्नी का स्कूल जाना', 'एक नाटक कई किरदार', 'मन्या', 'टँव-टँव' और 'फीड बैक' आदि कहानियों में

मानिंद है. इन अतीत की स्मृतियों का आत्मीयता के धरातल पर डॉ. घोरपड़ेजी ने उकेरा है.डॉ भ. प्र. निदारिया काकथन दृष्टव्य है-मुनिया की दुनिया में सत्यम् है अनुभव यात्राओं का जीवंत दस्तावेज बनी ये संस्मरणात्मक कहानियां पढ़कर पाठक भी इस दुनिया में वैसे ही विचरता-विहस्ता-आनंदित होता है. जैसे मुन्नी होती रही है. निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी संग्रह पाठकों को मुँह बोले रिश्तों के महत्व के निकट खिंचकर जीवन के सही यथार्थ की पहचान कराएगा औरआदर्श मानवीयता के गुणों से अवगत कराएगा.

इन कथानकों में केवल मनुष्य रूपी व्यक्तित्वो का ही उल्लेख नहीं है अपितु पशु-पक्षियों के अंतर्मन की अभिव्यक्ति भी साकार हो उठी है. कहानी संकलन के प्रथमपृष्ठ पर ही लेखिका ने मानवता के उच्च आदर्शों के प्रति आस्था का भाव रखते हुए कहानी संकलन इन्हीं महानुभावों को समर्पित किया है. जैसे-

उन मुँह बोले रिश्तों को..जिन्होंने ज़िंदगी के किसी भी मोड़ पर मुझे अनाथ नहीं होने दिया..

सम्मिलित चरित्र लेखिका के अपने चरित्र है, जा उसके संवेदनशील और भावुक मन की उपज है. सभी कहानियाँ संस्मरण रूपी अतीत की स्मृतियाँ है जिनका चरित्र निस्वार्थ औरनीर-क्षीर बहते प्रवाह के

शिराज शेख
शोध-छात्र,
हिंदी विभाग,
पुणे विश्वविश्वविद्यालय.